कौन सा मार्ग?

1884

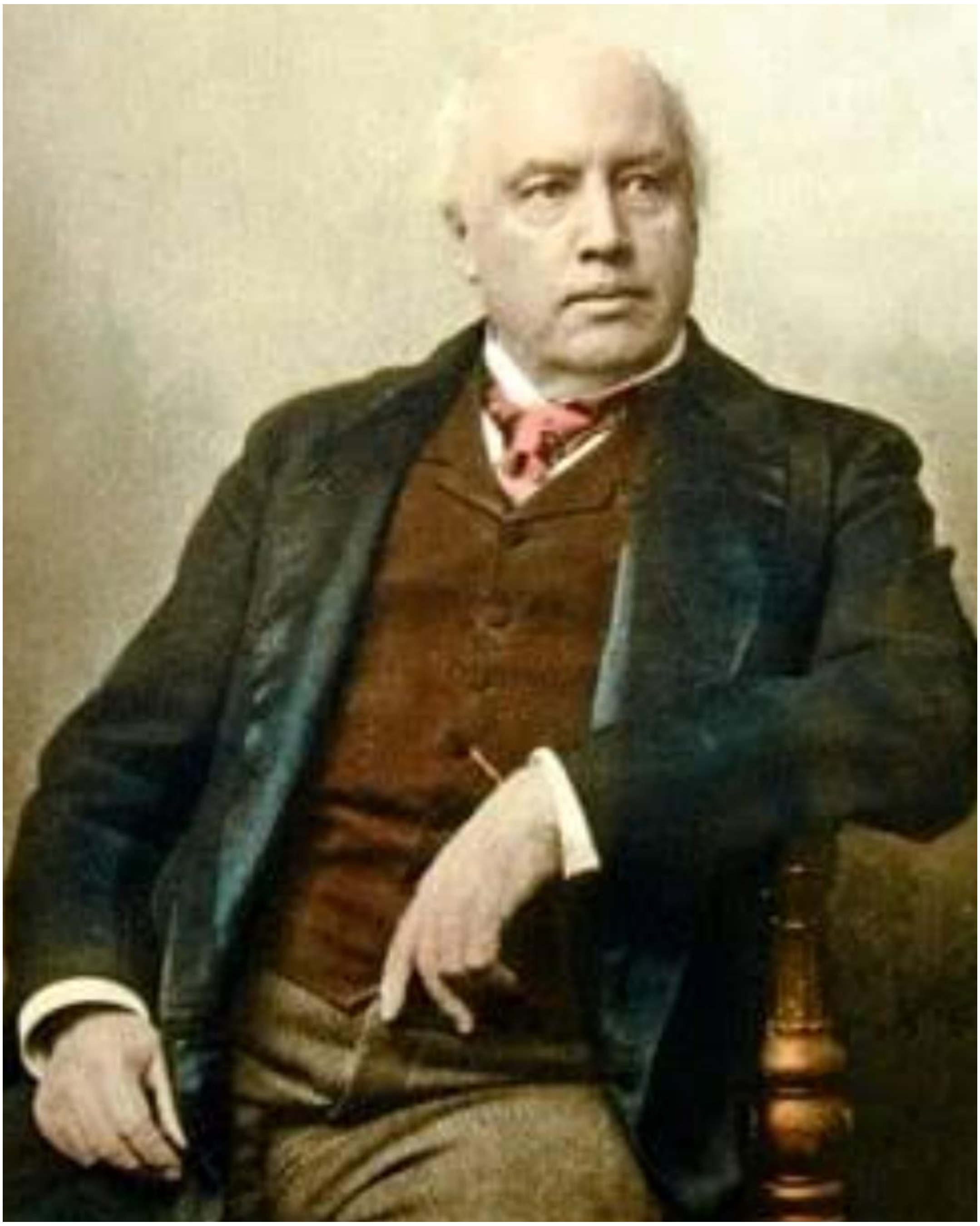

राबर्ट ग्रीन इंगरसोल

हिन्दी अनुवाद : मनोज मलिक

पीडीएफ संस्करण : नवंबर 2023

प्रकाशक : चंडीगढ़ ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन

Email : chandigarhhumanists@gmail.com

भूमिका

रॉबर्ट ग्रीन इंगरसॉल अमेरिका के महान चिंतक, वकील, लेखक और कुशल वक्ता थे। उनका जन्म 11 अगस्त 1833 को ड्रेसडेन, न्यूयॉर्क में हुआ। वे अपने प्रभावशाली भाषणों, सरल किन्तु स्पष्ट भाषा के कारण काफी लोकप्रिय हुए। इनके संबोधनों में प्रायः बाइबल, चर्च और इसके पादरी मुख्य रूप से निशाने पर रहते थे। फिर भी हमें इंगरसॉल की आलोचना को ईसाईयत तक सीमित न रखते हुए सभी धर्मों के संदर्भ में देखना चाहिए।

उन्होंने अमेरिकी गृह-युद्ध में सक्रिय भूमिका निभाई और उन्हें कर्नल की उपाधि मिली। वे इलिनॉय स्टेट के अटॉर्नी जनरल रहे। अपने निरीश्वरवादी / संशयवादी विचारों के कारण अटॉर्नी जनरल से आगे नहीं बढ़ पाए। एक बार रिपब्लिकन पार्टी के लोगों ने उन्हें अपने निरीश्वरवादी विचार छुपाने की शर्त पर, गवर्नर पद के लिए खड़े होने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया। वे सदैव दास-प्रथा, बहुपत्नी-प्रथा, रंग-भेद, अंधविश्वास के विरोधी रहे और स्त्री-अधिकारों, सेकुलरिज्म, समानता, लोकतंत्र, स्वतंत्र-अभिव्यक्ति, वैज्ञानिक सोच आदि प्रगतिशील विचारों के दृढ़ पक्षधर बने रहे। अपनी सख्त टिप्पणियों के कारण वे चर्च के पदाधिकारियों की आँख की किरकिरी बने रहे। 1880 में एक पादरी हेनरी बीचर ने इन्हें "दि ग्रेट अगनोस्टिक" कहकर पुकारा, तभी से यह उनका उपनाम-सा बन गया। इंग्लिश कवि वाल्ट व्हिटमैन उनके अच्छे मित्र थे।

उनकी पुस्तकों में The gods and other Lectures (1876), Some mistakes of Moses (1879), Voltaire : A lecture (1895), Why I am an Agnostic (1896) प्रमुख हैं। वे सच्चे अर्थों में एक मानववादी थे। उनकी मृत्यु 21 जुलाई 1899 को हुई।

रॉबर्ट ग्रीन इंगरसॉल के क्रांतिकारी विचारों से हिन्दीभाषियों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से इसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है कि इससे हिन्दी-पट्टी, जिसे जातिवादी, अंधविश्वास-भरी पिछड़ी सोच के कारण "कॉउ बेल्ट" भी कहा जाता है, में जागृति लाने में कुछ सहायता अवश्य मिलेगी। जय इन्सान, जय विज्ञान।

--- मनोज मलिक

2291, सैक्टर 23 सी, चंडीगढ़ 160023

मो. 9463432405

दो मार्ग हैं -- प्राकृतिक और परा- प्राकृतिक।

एक मार्ग तो है जिस संसार में हम जीते हैं, उस संसार के लिए जीने का, अध्ययन और खोज द्वारा अपने दिमाग को विकसित करने का और आविष्कार द्वारा प्राकृतिक शक्तियों से लाभ उठाने का, जिससे हमें अच्छे घर मिल सकें, वस्त्र मिल सकें और भोजन मिल सके, जिससे हम कला और विज्ञान द्वारा दिमाग की भूख मिटा सकें।

दूसरा मार्ग है उस संसार के लिए जीने का, जिसकी हम आशा लगाए रहते हैं, इस जीवन को, जो कि हमारे पास है, उस जीवन के लिए बलिदान करना, जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते हैं। दूसरा मार्ग है प्रार्थनाओं और कर्मकांडों के द्वारा बादलों से ऊपर रहने वाला किसी बेताल (Phantom) से सहायता, रक्षा प्राप्त करने का।

एक मार्ग है विचार करने का, खोज करने का, आँखें खोलकर देखने का और तर्क के प्रकाश का अनुसरण करने का। दूसरा मार्ग है विश्वास करने का, मान लेने का, पीछे चलने का, अपनी इंद्रियों, अपनी बुद्धि की प्रामाणिकता से इन्कार करने का, और ऐसे लोगों के सामने सिर झुका देने का जो बेशर्मी से कहते हैं कि हम सब जानते हैं।

एक मार्ग है अपने बंधुओं, अपनी पत्नी और अपने बच्चों के लाभ के लिए जीने का, जिन्हें हम प्यार करते हैं, उन्हें सुखी बनाने का और जीवन के दुखों से उनका बचाव करने का।

दूसरा मार्ग है भूतों, प्रेतों, जिन्नों और देवताओं के लिए जीने का, इस आशा से कि वे परलोक में इसका फल देंगे।

एक मार्ग है तर्क को सिंहासन पर बिठाने का, और तथ्यों पर भरोसा करने का। दूसरा है सहज-विश्वास (Credulity) के सिर पर ताज रखने का और विश्वास पर जीने का।

एक मार्ग है भीतरी प्रकाश के अनुसार चलने का, उस दीपक से जो बुद्धि को प्रकाशित करता है, सब कुछ इंद्रियों द्वारा, स्पर्श द्वारा, दर्शन द्वारा और आवाज के द्वारा जाँच-परख करने का।

दूसरा मार्ग है उस पवित्र दीपक को बुझा देने का और दूसरों का अंधानुकरण करने का।

एक मार्ग है ईमानदार आदमी बनने का, दूसरों को अपने विचारों से परिचित कराने का, सीधे खड़े होने का, निर्भय बनने का, काल्पनिक बेतालों और नरकों से बेपरवाह रहने का।

दूसरा मार्ग है जमीन पर रेंगकर चलने का, अपने साथ विश्वासघात करने का, और जिस स्वतन्त्रता का उपयोग करने का तुममें साहस नहीं है, उससे दूसरों को वंचित करने का।

आप लोग यह कल्पना न करें कि जो लोग आज तक दूसरे मार्ग पर चलते रहे हैं, जिन्होंने गलत दिशा ग्रहण की है, उनसे मैं घृणा करता हूँ। हमारे पूर्वज जो कर सकते थे, वह उन्होंने किया। वे प्रकृति से प्रेम की शक्ति में विश्वास करते थे। वे मानते थे कि बलिदानों और प्रार्थनाओं से, व्रत रखने और विलाप करने से, वह शक्ति, धूप, वर्षा और अच्छी पैदावार देगी -- इस संसार में लम्बी आयु और दूसरे में अनंत आनंद देगी। उनके लिए परमात्मा एक निरंकुश तानाशाह था, जो जल्दी गुस्से में होता और भयानक दण्ड देता था। वह ईर्ष्यालु, अपने शत्रुओं से घृणा करने वाला और अपने स्नेह भाजनों के प्रति उदार था। वे एक शैतान में भी विश्वास करते थे, जो शक्ति में परमात्मा से कुछ ही कम था, किन्तु ठग-विद्या में थोड़ा अधिक। इन दोनों के बीच में आदमी का वही हाल था जो बिल्ली के दोनों पंजों के बीच बेचारे चूहे का।

इन दोनों भगवानों से आदमी को डर लगता था। हमारे पूर्वज न भगवान से प्यार ही प्यार करते थे और न शैतान से घृणा ही घृणा। हाँ, वे दोनों से डरते थे। असल में वे परलोक में तो भगवान के कृपापात्र बने रहना चाहते थे और इस लोक में शैतान के। उनकी मान्यता थी कि प्रकृति उन्हीं दोनों की दासी है। उनकी समझ में बाढ़, तूफान, रोग, भूकम्प, आँधी आदि दण्ड स्वरूप भेजे जाते थे और सभी अच्छी चीजें पुरस्कार स्वरूप।

सभी कुछ परा-प्राकृतिक शक्तियों के अधीन था। हवा, अंधकार देवदूतों और शैतानों से भरे हुए थे; चुड़ैलें और जादूगर नेक लोगों के खिलाफ -- सच्चे विश्वासियों के खिलाफ षड़यंत्र रचते रहते थे। सूर्य-ग्रहण और चंद्र-ग्रहण लोगों के पापों के परिणाम समझे जाते थे और हर असाधारण घटना एक चमत्कार थी। ईसाईयत एक पागलखाने थी और पागल पादरी उनके रक्षक। विज्ञान का नामोनिशान नहीं था। लोग न खोज करते थे न विचार। वे केवल (भय से) काँपते थे और विश्वास करते थे। अज्ञान और अंधविश्वास का ही ईसाई जगत पर शासन था।

आखिरकार, कुछ लोगों ने ध्यान से देखना शुरू किया, सोचना-विचारना शुरू किया।

यह पता लगा कि चंद्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण निश्चित समय के अंतराल पर आते हैं और उनके होने का पहले से पता लगाया जा सकता है। इससे यह साफ हो गया कि मनुष्य के

कर्मों और ग्रहणों का आपस में कोई संबंध नहीं। कुछ लोग यह संदेह करने लगे कि भूकंप और तूफान प्राकृतिक कारणों से होते हैं और उनका मानव-जाति से कोई संबंध नहीं।

कुछ लोगों ने बुरी आत्माओं के अस्तित्व पर संदेह करना शुरू किया या दुनिया के मामलों से अच्छी आत्माओं के किसी भी तरह के संबंध में। नक्षत्र-विज्ञान के बारे में कुछ जानकर, तारों की विशाल संख्या के बारे में, ग्रहों की निश्चित और निरंतर गति के बारे में, और यह तथ्य कि इनमें से कई पृथ्वी से काफी बड़े हैं; पृथ्वी के बारे में जानकर, चीजों के धीरे-धीरे विकास, पौधों की वृद्धि और उनके वर्गीकरण के बारे में, द्वीपों तथा महाद्वीपों के निर्माण के बारे में, आग, पानी और हवा ने असंख्य शताब्दियों में उनके निर्माण में जो भूमिका निभाई है, सभी तरह के जीवन के आपसी रिश्ते-नातेदारी के बारे में, सौरमंडल में पृथ्वी का स्थान निश्चित करके; प्रयोगों और खोज के द्वारा रसायन-शास्त्र के कुछ रहस्यों का पता लगाकर; छापेखाने के आविष्कार द्वारा तथ्यों और विचारों को सुरक्षित रखकर; वे अंधविश्वास की कुछ जंजीरों को तोड़ने के लायक बने, परा-प्राकृतिक के अधिकार-क्षेत्र को कुछ ढीला करके, और प्रकाश की ओर अपना चेहरा घुमाया।

धीरे-धीरे खोजियों और विचारकों की संख्या बढ़ी। धीरे-धीरे तथ्यों का संग्रह हुआ, विज्ञान प्रकट हुए, पुराने विश्वास थोड़े बेहूदा प्रतीत होने लगे और परा-प्राकृतिक शक्ति कुछ पीछे हटी तथा उसने मनुष्यों के मामलों में दखल देना बन्द कर दिया।

विद्यालयों की स्थापना हुई, बच्चों को शिक्षा दी गई, पुस्तकें छापी गईं, और विचारकों की वृद्धि हुई। दिन-प्रतिदिन परा-प्राकृतिक शक्ति में विश्वास घटता गया और दिन-प्रतिदिन मनुष्य का इस बात में विश्वास बढ़ता गया कि वह स्वयं अपना रक्षक और भाग्य-विधाता है। असभ्यता और अंधविश्वास के अंधकार में से प्राकृतिक का अरुणोदय हुआ है। दिमाग को स्वतन्त्रता की हवा लगी और आदमी अपनी शक्ति के सपने देखने लगा। चारों ओर खोज, आविष्कार और साहसपूर्ण विचार दिखाई देने लगे। ईसाईयत ने विज्ञान के मित्रों को अपना शत्रु समझना आरम्भ कर दिया। धर्मशास्त्रियों ने लोगों के अंग-भंग करने और उत्पीड़न करने के लिए जंजीरों और चिताओं का सहारा लिया।

विचारकों को नास्तिक और अनीश्वरवादी कहकर उनकी निंदा की गई। उन्हें शैतान के बच्चे और ईसा को बदनाम करने वाला कहा गया। अंधविश्वासों के तमाम अज्ञान, ईर्ष्या और जलन को उत्तेजित किया गया और सभी खोज और विचारों का नाश करने के लिए एक हो गए। शताब्दियों तक यह संघर्ष जारी रहा। कोई ऐसा अत्याचार न था, कोई ऐसा पाप न था जो

परा-प्राकृतिक के विश्वासियों ने न किया हो। किन्तु इस सबके बावजूद प्राकृतिक की संख्या बढ़ने लगी और चर्च की शक्ति घटने लगी। अब सारी समझदार दुनिया प्राकृतिक के पक्ष में है। अभी भी संघर्ष जारी है। परा-प्राकृतिक लगातार हार रहा है और प्राकृतिक लगातार प्रबल हो रहा है। कुछ ही वर्षों में अंधविश्वास पर विज्ञान की जीत संपूर्ण और सार्वभौमिक होगी।

इस प्रकार कई शताब्दियों से जीवन के संबंध में दो दर्शन चले आ रहे हैं -- एक तृष्णाओं के दमन का मार्ग, इच्छाओं को कम करने का मार्ग और किसी उच्चतर शक्ति पर पूरी तरह से निर्भर रहने का मार्ग। दूसरा, कामनाओं की उचित पूर्ति का मार्ग, इच्छाओं की वृद्धि और उद्योग, चतुराई तथा आविष्कार द्वारा उनकी पूर्ति का मार्ग तथा मनुष्य का अपनी शक्ति पर भरोसा करने का मार्ग। डियोजेनस, एपीकटेटस और एक सीमा तक सुकरात, बुद्ध और ईसा सभी ने पहले दर्शन की शिक्षा दी। ये सभी धन और आरामपरस्ती से घृणा करते थे, सभी कला और संगीत के शत्रु थे, सभी को अच्छे वस्त्र, अच्छा भोजन और अच्छे घर अच्छे नहीं लगते थे। वे गरीबी और चीथड़ों के दार्शनिक थे। वे अज्ञान और श्रद्धा के दार्शनिक थे। उन्होंने इस लोक के दुखों और परलोक के सुखों का प्रचार किया। वे संपन्न, उद्योगी और जीवन का आनंद भोगने वालों पर नाक-भौं सिकोड़ते थे और भिखमंगों के लिए स्वर्ग में स्थान सुरक्षित रखते थे।

अब इस दर्शन का प्रभाव घट रहा है। अब ज्यादातर लोग यहाँ इसी जीवन में सुखी होना चाहते हैं। ज्यादातर लोग भोजन चाहते हैं, निवास-स्थान चाहते हैं, अच्छे वस्त्र चाहते हैं, पुस्तकें चाहते हैं, चित्र चाहते हैं, आराम और आनन्द चाहते हैं। वे दिमाग की शक्तियों का विकास करने में विश्वास रखते हैं और प्रकृति की शक्तियों पर अपना अधिकार कर उन्हें अपना दास और नौकर बनाने में दिलचस्पी रखते हैं।

अब संसार के समझदार आदमियों ने आत्म-पीड़ा की शिक्षा को, आत्म-पीड़ा के दर्शन को तिलांजलि दे दी है। अब वे भूखों मरने और आत्म-पीड़ा को सदाचार नहीं मानते। उनका विश्वास है कि प्रसन्नता ही एकमात्र अच्छाई है और प्रसन्न रहने का समय अभी है, इसी संसार में है। अब वे परा-प्राकृतिक शक्ति द्वारा दिए जाने वाले दंडों और पुरस्कारों में विश्वास नहीं करते। वे परिणामों में विश्वास करते हैं, बुरे कृत्यों का परिणाम बुरा होता है और भले कृत्यों का परिणाम भला समझते हैं।

उनका विश्वास है कि आदमी को खोज करके, विचार करके यह पता लगाना चाहिए कि आदमी किस हालातों में प्रसन्न रह सकता है और उसे इन्हीं हालात के अनुसार कृत्य करना

चाहिए। वे नहीं मानते कि भूकंपों, आँधियों और ज्वालामुखियों और ग्रहणों का आदमियों के कृत्य से लेना-देना है। अब वे परा-प्राकृतिक में विश्वास नहीं करते हैं। अब वे अपने आपको न किसी दैवी-राजा का गुलाम समझते हैं और न नौकर और न कृपापात्र। वे अनुभव करते हैं कि बहुत सी बुराइयाँ ज्ञान द्वारा दूर की जा सकती हैं और इसलिए वे दिमाग के विकास में विश्वास करते हैं। विद्यालय उनका मंदिर है और विश्वविद्यालय उनका महान पूजा-घर।

इसलिए संसार में कुछ शताब्दियों से सरकार के दो सिद्धांत चले आ रहे हैं -- एक धार्मिक (theological) सिद्धांत और दूसरा लौकिक (Secular) सिद्धांत।

राजा अपनी शक्ति सीधे ईश्वर से प्राप्त करता था। लोगों का काम राजा की आज्ञा का पालन करना था। पुजारियों के जो संप्रदाय थे वे उन्हें ईश्वर से प्राप्त थे और उन पर विश्वास करना लोगों का कर्तव्य था।

धार्मिक सरकारें अब कुछ कुछ अलोकप्रिय होती जा रही हैं। इंग्लैंड में संसद ने ईश्वर का स्थान ले लिया है, और संयुक्त राज्य में शासन अपनी शक्ति शासितों से ही प्राप्त करता है। शायद जर्मनी का सम्राट विलियम ही ऐसा समझता है कि सचमुच यह मानता है कि ईश्वर ने उसे सिंहासन पर बैठाया है, और वही है जो उसे राजगद्दी पर बनाए रखेगा, भले ही जर्मन लोग संतुष्ट हों या न हों। इटली ने कैथोलिक ईश्वर को राजनीति से अलविदा कर दिया है, फ्रांस फ्रांसीसियों का है और उन्हीं के द्वारा शासित होता है और रूस में भी लाखों आदमी जार और उसके दैवीय अधिकार को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

धार्मिक सरकारें लुप्त हो रही हैं और धीरे-धीरे लौकिक सरकारें उनका स्थान ले रही हैं। आदमी पहले की अपेक्षा बड़ा बनता जा रहा है और देवतागण अस्पष्ट होते जा रहे हैं। ये "दैवीय" सरकारें अधिकांश लोगों के भय और अज्ञान और थोड़े से लोगों की ठग-विद्या, बेशर्मी और झूठे आचरण पर आधारित हैं। लौकिक सरकार न केवल कुछ किंतु बहुत लोगों की बुद्धिमत्ता, ईमानदारी और साहस में से पैदा होती है।

हमने यह देख लिया है कि आदमी बिना किसी पंडे या पुजारी, भूत-प्रेत या ईश्वर की सहायता के अपने आप पर शासन कर सकता है। हमने यह देख लिया है कि मजहब अपने में स्वतः-प्रमाणित वस्तु नहीं है, और बिना सबूत के विश्वास करना कोई प्रशंसनीय कृत्य नहीं है। हम जानते हैं कि जो स्वयं-सिद्ध है वह दिमाग का वर्ग और दिशा-सूचक यंत्र है, दिमाग के आकाश में ध्रुव तारे की तरह है। और हम जानते हैं कि कोई भी स्वयं-सिद्ध से इन्कार नहीं करता है हम यह भी जानते हैं कि जब पर्याप्त सबूत हों तो विश्वास करने में कोई खास

अच्छाई नहीं है और निश्चित रूप से, पर्याप्त सबूत न होने पर भी। यह कहने में कि हम विश्वास करते हैं, कुछ अच्छाई नहीं है।

सभी विश्वासी भले आदमी नहीं हुए हैं। संसार में कुछ बहुत ही घटिया आदमी विश्वासी हुए हैं। जिन महानुभावों ने सुकरात को जहर का प्याला दिया, वे सब विश्वासी थे। जिन यहूदियों ने ईसा को सूली पर चढ़ाया, वे ईश्वर के विश्वासी और पूजक थे। शैतान के बारे में कहा जाता है कि वह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की ट्रिनिटी में विश्वास करता है। इसका उसके आचरण पर कोई प्रभाव पड़ता दिखाई नहीं देता। बाइबल के अनुसार वह काँपता है, किंतु उसमें कोई सुधार नहीं होता। अंत में हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि हमें अपने पूर्वजों के धर्म की परीक्षा करने का अधिकार है।

2

सभी ईसाई जानते हैं कि उनके अपने ईश्वर जेहोवाह के अलावा, बाकी सभी ईश्वर मनुष्य द्वारा रचे गए हैं, वे झूठे थे, और झूठे हैं, मूर्ख थे और मूर्ख हैं, भयानक थे और भयानक हैं; कि सभी गैर-ईसाई मंदिरों और उनकी वेदिकाओं की रचना व्यर्थ हुई है; कि सभी बलिदान व्यर्थ थे, कि पुरोहित ढोंगी थे, उनकी प्रार्थनाएं कभी सुनी नहीं गईं, कि गरीब आदमियों को हमेशा धोखा दिया गया है, लूटा गया है और गुलाम बनाया गया है।

लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हमारा ईश्वर दूसरों के ईश्वरों से श्रेष्ठ है?

हम इस समय यह प्रश्न पूछ सकते हैं क्योंकि हम सम्पन्न हैं और सम्पन्नता साहस प्रदान करती है। यदि इस समय कुछ भूकम्प होते या महामारियाँ होतीं तो शायद हम घुटनों के बल बैठ, आँखें बंद कर ईश्वर से इस तरह का विचार मन में आने देने के लिए भी क्षमा मांगते। हम जानते हैं कि अकाल श्रद्धा की मित्र है और विपत्ति अंधविश्वास की सहायक है। लेकिन चूंकि इस समय हम न किसी महामारी या अकाल से पीड़ित हैं, धरती की सतह शान्त है, इसलिए हम ईश्वर के असली चरित्र की परीक्षा आर सकते हैं।

यह स्वीकार करना चाहिए कि शक्ति का उपयोग चरित्र की एक बहुत बढ़िया कसौटी है।

क्या एक भला ईश्वर पक्षपात और अज्ञान की तलवार और ढाल को अपील करेगा? उस अंधविश्वास को अपील करेगा जो पंडे-पुरोहितों के नेतृत्व में रहने वाली मूर्खता की एक कड़ी है? भय को अपील करेगा, जो ठग और ढोंगी का मूल धन है? क्या एक भला ईश्वर अपने

बच्चों को डराएगा या ज्ञान देगा? क्या एक भला ईश्वर तर्क को अपील करेगा या अज्ञान को? न्याय को या स्वार्थ को? स्वतन्त्रता को या सजा को?

हमारे पहले माता-पिता को ईडन गार्डन में हमारे ईश्वर ने प्रेम की पवित्रता के बारे में कुछ नहीं कहा, बच्चों के बारे में कुछ नहीं, न्याय और स्वतन्त्रता के बारे में कुछ नहीं।

जब उनसे आज्ञा का उल्लंघन हो गया तो वह जंगली जानवर की तरह भयानक बन गया। उसने पृथ्वी को अभिशाप दिया और ईव को कहा -- "मैं तुम्हारे दुख को बहुत बढ़ा दूँगा। दुख में ही तुम्हें बच्चों को जन्म देना होगा। तुम्हारा पति तुम पर शासन करेगा।"

हमारे भगवान ने प्रेम को पीड़ा का दास बनाया, पत्नियों को गुलाम बनाया और संसार की गृहस्थी को पशुत्व में बदल दिया।

हमारे भगवान ने आठ लोगों के अलावा शेष सारे संसार को पानी में डुबो दिया; पृथ्वी को लाशों से भरे हुए एक समुद्र में बदल दिया।

जब वह जानता था कि उसे उनका नाश करना पड़ेगा, तो उसने पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को जन्म ही क्यों दिया? उसने उनके सुधार का प्रयत्न क्यों नहीं किया? जब वह जानता था कि उनका सुधार नहीं हो सकता, तो उसने लोगों की रचना ही क्यों की?

क्या यह सम्भव है कि हमारा भगवान समझदार और अच्छा दोनों था?

उस महान बाढ़ के बाद हमारे भगवान ने यहूदियों को चुना और अपने बाकी सारे बच्चों को छोड़ दिया। उसने हिन्दुओं की ओर ध्यान नहीं दिया, मिस्रियों की उपेक्षा की, वह पारसियों की ओर से लापरवाह हो गया, असीरियों को भूल गया और यूनान के लोगों को याद न रख सका। इतना सब होने पर भी वह सबका पिता था। शताब्दियों तक वह एक कबीलाई भगवान था, बहुतों से घृणा और थोड़े लोगों की रक्षा करने वाला। हमारा भगवान अज्ञानी था। वह नक्षत्र-विज्ञान और भूगर्भ-विज्ञान के बारे में कुछ न जानता था। वह यह भी नहीं जानता था कि पृथ्वी का आकार कैसा है। वह सोचता था कि तारे आकाश में लगे हुए धब्बे हैं।

वह रोगों के बारे में कुछ नहीं जानता था। वह समझता था कि बहते पानी पर मारे गए पक्षी का खून अच्छी दवाई है। वह बदला लेने वाला और निर्दयी था। वह अपने कुछ बच्चों को दूसरों की हत्या करने में सहायता देता था। उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को मार डालें और कुँवारियों को जीवित रखकर उन्हें अपने सैनिकों में बाँट दें।

हमारे भगवान ने गुलामी की स्थापना की -- आदमियों को अपने मानव-बंधुओं को खरीदने और औरतों बच्चों की खरीद फरोख्त की आज्ञा दी। हमारे भगवान ने बहुपत्नी-विवाह की आज्ञा दी और पत्नियों को उनके पतियों की सम्पति बनाया। हमारे भगवान ने राजा के अपराधों के लिए लोगों की हत्या की।

कोई भी समझदार आदमी जिसका दिमाग अंधविश्वास से विषाक्त नहीं हो गया है, जिसकी बुद्धि भय के कारण जड़ नहीं हो गई है, यदि ओल्ड टेस्टामेंट को पढ़ेगा, तो उसे इस परिणाम पर पहुँचना ही होगा कि हमारा भगवान एक जंगली पशु था।

यदि बिना भगवान हमारा कान चले तो उसे दयावान होना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि करुणा की वीणा के तार टूटे नहीं। हमें याद रखना चाहिए कि जब न्याय की तलवार कमजोर की सहायता के लिए उठती है, तब उसमें फूल खिलते हैं, और उन फूलों की सुगंध ही वह धूप है, वह पूजा है, और वह बलि है जिसे करुणा की देवी स्वीकार करती है।

3

इस प्रकार रोग के कारण और उसकी चिकित्सा के बारे में भी दो मत रहे हैं। एक मजहबी और दूसरा वैज्ञानिक।

मजहबी मत के अनुसार रोगों का कारण वे दुष्ट आत्माएं थीं, वे शैतान थे, जो आदमियों के शरीर में प्रवेश पा जाते थे। इन शैतानों को पैगम्बर, पहुँचे हुए आदमी और पुरोहित निकाल सकते थे।

जब ईसा इस धरती पर था, तब उसका मुख्य धंधा इन दुष्ट आत्माओं को निकालना ही था।

कई शताब्दियों तक, पुरोहितों ने इसके उदाहरण का अनुसरण किया, और मध्य युग के दौरान मनुष्यों के शरीरों से लाखों शैतान निकाले गए। रोगों को इन चीजों से ठीक किया जाता था -- पवित्र जस्ते की छोटी-छोटी मूर्तियों द्वारा, कागज के टुकड़ों द्वारा, गले में क्रॉस लटकाकर -- प्लास्टर आफ पेरिस से बनी कुमारियों और मिट्टी के क्राइस्टों को बिस्तर के सिरहाने रखकर, मृत संतों की हड्डियों को या क्रॉस को छूकर, या एक नाखून जो ईसा के मांस से निकाला गया, या एक पोशाक जो वर्जिन मैरी द्वारा पहनी गई थी या पवित्र जल छिड़ककर या प्रार्थनाएँ कहकर, या मालाएँ गिनकर, या क्रॉस स्थापित करके, या मांसाहार छोड़कर, या बाल ढँककर, या किसी तरह से शरीर को तड़पा कर। सभी रोग परा-प्राकृतिक मूल के समझे जाते थे और सभी ईलाज भी उसी ढंग से किए जाते थे। महामारियाँ पुरोहितों द्वारा किए

जाने वाले धार्मिक समारोहों से रुकते थे। रोगों के प्राकृतिक कारणों और प्रभावों की कोई जानकारी नहीं थी।

सब कुछ चामत्कारिक और रहस्यमयी था। पुरोहित चालाक और लोग सहज-विश्वासी थे।

धीरे-धीरे रोग के कारण और उसके ईलाज के संबंध में एक दूसरे मत ने दिमाग में जगह बनाई। कुछ लोगों ने दुष्ट आत्माओं वाले मत को छोड़ दिया और अपने मन में इस बात को जगह दी कि रोग प्राकृतिक कारणों से पैदा होते हैं और उनमें से बहुत से रोग प्राकृतिक उपायों से अच्छे किए जा सकते हैं।

आरम्भ में चिकित्सक बहुत अज्ञानी था, किन्तु फिर भी वह पुरोहित से अधिक जानता था। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, उसने पुरोहित को रोगी के बिस्तर के पास से दूर हटा दिया। आखिरकार कुछ लोगों में इतनी अक्ल तो आ गई कि वे अपने शरीर के बारे में डॉक्टरों पर भरोसा कर सकें, किन्तु इतने मूर्ख बने ही रहे कि वे अपनी आत्मा पुरोहितों के हाथ में ही सुरक्षित समझें। सभ्य लोगों में रोग-संबंधी मजहबी मत एक ओर फेंक दिया गया है और अब चिकित्साशास्त्र में चमत्कारपूर्ण और परा-प्राकृतिक के लिए कोई स्थान नहीं। कैथोलिक देशों में अब भी मूर्तियों, प्रार्थनाओं, पवित्र जल तथा संतों की हड्डियों द्वारा लोगों का ईलाज किया जाता है, किन्तु जब पादरी स्वयं बीमार पड़ते हैं तो वे डॉक्टर को बुला भेजते हैं। अब तो ईश्वर के एजेंट पोप तक अपना पवित्र शरीर डाक्टर के हाथ में ही सुरक्षित समझता है!

रोगों के वैज्ञानिक मत ने मजहबी मत पर एक बड़ी हद तक जीत हासिल कर ली है।

अब कोई समझदार आदमी यह विश्वास नहीं करता कि दुष्ट आत्माएँ आदमियों के शरीर में प्रवेश पा जाती हैं। अब कोई समझदार आदमी यह विश्वास नहीं करता कि दुष्ट आत्माएँ आदमियों के कामों में दखल देने का प्रयास करती हैं। अब कोई समझदार आदमी यह विश्वास नहीं करता कि दुष्ट आत्माएँ होती भी हैं!

इतना होने पर भी, इस समय, न्यूयार्क शहर में कैथोलिक पादरी कुँवारी मैरी की माँ समझी जाने वाली सेंट एनी की हड्डियों का प्रदर्शन कर रहे हैं। इनमें से कुछ पादरी अंधे श्रद्धालु तथा निर्मल बुद्धि हो सकते हैं, परन्तु शेष सब शुद्ध ठग हैं। यदि उनमें कुछ भी समझदारी हो तो उन्हें मालूम होना चाहिए कि वे यह बात किसी भी तरीके से सिद्ध नहीं कर सकते कि उस हड्डी के टुकड़े का सेंट एनी से कभी किसी तरह का संबंध रहा है। और यदि उनमें कुछ भी असली समझदारी है तो उन्हें यह बात मालूम होनी चाहिए कि सेंट एनी की हड्डियाँ

भी सार रूप में दूसरों की हड्डियों के समान हैं, उसी तरह सार-सामग्री से बनी हुई हैं। और सभी मानव हड्डियों में चमत्कारपूर्ण और रोगनाशक गुण हो सकते हैं तो वे एक जैसे ही होने चाहिएँ। फिर भी ये पादरी, अपने सहज-विश्वासी वंचितों से इन पवित्र हड्डियों को देखने और जिस बक्से में ये रक्खी हैं, उसका चुम्बन लेने के लिए लाखों डॉलर प्राप्त करते हैं।

आर्चबिशप कोरीगन जानते हैं कि कोई नहीं जानता कि विर्जन मैरी की माँ कौन थी, कि इस अज्ञात माँ की हड्डियों के बारे में कोई नहीं जानता, वह जानते हैं कि यह सब एक मजहबी घोटाला है, वह जानते हैं कि उसके अधिकार-क्षेत्र के पादरी इस झूठी बात के सहारे पर धन प्राप्त कर रहे हैं। कार्डिनल गिब्बन्स भी यह जानते हैं कि, किन्तु इन पवित्र भद्रपुरुषों में से किसी के पास भी इस बेशर्म अपराध पर कहने के लिए एक भी शब्द नहीं है। वे इच्छुक हैं कि चर्च के फायदे के लिए पादरी अज्ञानी विश्वासियों की आशाओं और भय का कारोबार करें; वे इच्छुक हैं कि जो घोटाला राजस्व पैदा करता है, वह चलता रहे, खूब फले-फूले।

यह मजहबी आदमी की ईमानदारी है। यदि कभी ये भद्रपुरुष बीमार पड़ जाएँ तो वे इन अवशेषों को नहीं छुएंगे। वे एक डॉक्टर को बुलाने के लिए किसी को भेजेंगे।

मैं आपको एक जापानी कहानी सुनाता हूँ जो इस प्रसंग के बिल्कुल अनुकूल है;

एक बूढ़ा साधु एक मठ का संरक्षक था, जो कि एक संत की हड्डियों के ऊपर बना हुआ था। इन हड्डियों में लोगों के रोगों को ठीक करने की शक्ति थी और वे इस ढंग से रक्खी थी कि लोग एक बिल में से हाथ डालकर तीर्थयात्री उन्हें स्पर्श कर सकते थे। अनेक रोगों से ग्रस्त बहुत से लोगों ने आ-आकर उनका स्पर्श किया था। अनेकों यह समझकर कि स्पर्श से उन्हें लाभ हुआ है, या उनके रोग दूर हो गए हैं, कृतज्ञतापूर्वक उस साधु के पास बहुत सा धन छोड़ गए थे। एक बार उस बूढ़े साधु ने अपने सहायक को इस तरह सम्बोधित किया : "मेरे प्रिय पुत्र, व्यापार ठीक नहीं चल रहा है, मैं अकेला ही आने वालों से निपट सकता हूँ। तुम्हे अपने लिए कोई दूसरी जगह देखनी होगी। मैं तुम्हे सफेद गधा, कुछ धन और अपना आशीर्वाद देता हूँ।"

इस प्रकार वह नौजवान गधे पर बैठकर अपने रास्ते पर चला गया। कुछ दिनों में उसका धन समाप्त हो गया, और सफेद गधा मर गया। उस नौजवान के दिमाग में एक विचार आया। उसने गधे को सड़क किनारे दबा दिया और हर यात्री के सामने हाथ फैलाकर बड़ी गम्भीर मुद्रा में कहने लगा -- "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे इस निष्पाप की हड्डियों पर एक छोटा-सा मंदिर बनाने के लिए कुछ धन दीजिए।"

उसे ऐसी सफलता मिली कि वह एक मंदिर बना सका और हजारों लोग उस निष्पाप की हड्डियों का स्पर्श करने के लिए आने लगे। नौजवान धनी बन गया। उसने अनेक सहायक नौकर रख लिए बड़े ठाठ-बाट से रहने लगा।

एक दिन उसके मन में आया कि वह अपने पुराने गुरु से मिल आए। अपने साथ बहुत से नौकर-चाकर लेकर वह अपने पुराने मठ की ओर चला। जब वह वहाँ पहुँचा तो वृद्ध साधु दरवाजे पर बैठा था। उसने उसकी तथा नौकर-चाकरों की ओर बड़ी हैरानी से देखा। नौजवान नीचे उतरा और अपना परिचय दिया। बूढ़ा साधु चिल्लाया:-- "तुम्हारा कहाँ चले गए थे। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम अपनी सफलता की कहानी बताओ।" नौजवान ने उत्तर दिया, "बुढ़ापा मूर्ख है, परन्तु युवा के पास विचार हैं। अकेले में सब कुछ बताऊंगा, इंतजार करो।"

इस प्रकार रात को नौजवान ने सारी कहानी बताई। उसने गधे की मृत्यु और उसे दफनाने की, एक निष्पाप की हड्डियों पर मंदिर बनाने के लिए धन माँगने, और हड्डियों द्वारा लोगों के ईलाज से प्राप्त धन की कहानी विस्तार से बताई।

जब उसने संतुष्टि भरी मुस्कान के साथ बात समाप्त की और जोड़ा "बुढ़ापा मूर्ख है, परन्तु युवा के पास विचार हैं।"

बूढ़े साधु ने अपना काँपता हुआ हाथ अपने मेहमान के सिर पर रखते हुए कहा, "इतनी जल्दबाजी मत करो नौजवान। यह मठ जिसमें तुम्हारा बचपन बीता, जिसमें तुमने इतने चमत्कार देखे, इतने रोगी चंगे होते देखे। यह तुम्हारे गधे की माँ की ही पवित्र हड्डियों पर बना हुआ है।"

4

संसार की पवित्र पुस्तकों और धर्मों की व्याख्या दो तरह से हो सकती है।

एक तो यह कहकर कि हमारी पवित्र पुस्तकें प्रेरित लोगों के द्वारा लिखी गईं और हमें अपने धर्म का इलहाम भगवान के द्वारा हुआ। दूसरे यह कहकर कि सभी पुस्तकें बिना किसी अलौकिक शक्तियों की सहायता के, आदमियों द्वारा लिखी गईं और सभी धर्म प्राकृतिक तरीके से पैदा हुए हैं।

हम देखते हैं कि दूसरी नस्लों और लोगों के पास भी धर्म पुस्तक हैं, पैगम्बर हैं, पुरोहित हैं। हम यह भी देखते हैं कि उनके धर्मग्रंथ ऐसे आदमियों द्वारा लिखे गए, जिनमें उनकी अपनी

जाति के संस्कार और अनोखी बातें विद्यमान थीं, और उन धर्मग्रंथों में ऐसी गलतियाँ और बेहूदा बातें भरी पड़ी हैं जो कि उन धर्मग्रंथों को पैदा करने वाले लोगों की विशेषता है।

ईसाई इस बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हैं कि उनके ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट को छोड़कर बाकी सभी कथित पवित्र पुस्तकें मनुष्यों की रचनाएँ है और उनके इलहामी होने की बात पूरी तरह बेहूदा है। इसलिए उनका विश्वास है कि यहूदी धर्म और ईसाईयत को छोड़कर बाकी सभी धर्म मनुष्यों के बनाए हुए हैं। दूसरे धर्म वालों की मान्यता है कि उनका अपना धर्म ईश्वर द्वारा भेजा गया इलहामी धर्म है और यहूदी धर्म और ईसाईयत सहित बाकी सभी धर्म मनुष्यों के बनाए हुए हैं। सभी का कहना ठीक है और सभी का कहना गलत है। जब वे कहते हैं कि दूसरे धर्म मनुष्यों की रचना है तो वे ठीक हैं। और जब वे कहते हैं कि उनके अपने धर्म इलहामी हैं, तो वे गलत हैं।

अब हम जानते हैं कि सभी कबीलों और सभी राष्ट्रों का कोई न कोई धर्म रहा है। वे ऐसी अच्छी और बुरी आत्माओं या शक्तियों के अस्तित्व में विश्वास करते रहे हैं जो भेंट या प्रार्थनाओं से संतुष्ट हो सकती थी। अब हम जानते हैं कि प्रत्येक धर्म के मूल में, प्रत्येक पूजा के मूल में, भय का पीला और रक्तहीन चेहरा है। अब हम जानते हैं कि सभी धर्म और सभी पवित्र पुस्तकें प्राकृतिक ढंग से पैदा हुई हैं। सभी के मूल में अज्ञान है, भय है और चालाकी है।

अब हम जानते हैं कि भेंट, बलिदान और प्रार्थनाएँ -- ये सभी बेकार हैं। वे न कभी किसी भगवान के पास पहुँची हैं और न कभी उन्हें किसी भगवान ने सुना और न उन्हें पूरा किया है।

कुछ वर्ष पहले प्रार्थनाएँ युद्धों की जीत-हार का फैसला करती थीं और यह समझा जाता था कि ईश्वर के दरबार में पुरोहितों का विशेष प्रभाव होने के कारण किसी को भी विजयी बना सकते थे। अब कोई बुद्धिमान आदमी किसी प्रार्थना से कोई आशा नहीं लगाता। वह जानता है कि प्रकृति आदमी की इच्छा-अनिच्छा की परवाह अपने रास्ते पर चलती है। बादल तैरते रहते हैं, हवाएँ चलती हैं, वर्षा होती है, सूर्य चमकता है, और इन्हें मानव-जाति की इच्छा-अनिच्छा से कुछ लेना-देना नहीं है। तो भी लाखों-करोड़ों आदमी अब भी प्रार्थना करते रहते हैं। वे अब भी किसी भगवान से सहायता की आशा लगाए रहते हैं और समझते हैं कि कोई न कोई उनकी बीमारियों और दुर्घटनाओं से रक्षा करेगा। साल दर साल पुजारी एक ही प्रकार के

प्रार्थना-पत्र देते रहते हैं, एक ही प्रकार की चीजों के लिए माँग करते रहते हैं। हालांकि इसका कभी कोई नतीजा नहीं निकलता, तो भी उनका यह क्रम जारी रहता है।

जब कोई भले आदमी कोई अच्छी बात करते हैं तो पुजारी उसका श्रेय भगवान को देते हैं, किन्तु जब बुरी बातें होती हैं तो वे उन बुरी बातों के करने वालों को दोष देते हैं और उस समय भगवान को दोषी ठहराना भूल जाते हैं।

प्रार्थना करना एक एक व्यापार बन गया है, एक पेशा, एक कारोबार। एक धर्मोपदेशक इतना प्रसन्न कभी नहीं होता, जितना लोगों के सामने प्रार्थना करते समय होता है। उनमें से ज्यादातर भगवान से अत्यधिक परिचित हैं। यह जानते हुए कि वह सब कुछ जानता है, वे उसे राष्ट्र की आवश्यकताओं और लोगों की इच्छाओं से परिचित कराते हैं और उसे सलाह देते हैं कि वह क्या करे और कब करे। वे उसके अभिमान को अपील करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि वह कुछ बातें अपनी शान की रक्षा के लिए करे। वे कभी-कभी असम्भव बातों के लिए प्रार्थना करते हैं। वाशिंगटन के प्रतिनिधि-सभा के भवन में मैंने एक धर्मोपदेशक को ऐसी बात के लिए प्रार्थना करते सुना, जिसे वह स्वयं असम्भव मानता होगा। उसने चेहरे पर बिना तरह के बदलाव के, बिना किसी मुस्कुराहट के, उसी गम्भीरता के साथ जैसा श्मशान में होता है, कहा :-- "हे भगवान! मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि कांग्रेस को बुद्धिमानी दो।" सम्भव है कि ये धर्मोपदेशक वास्तव में यह समझते हों कि उनकी प्रार्थनाओं से किसी को कुछ लाभ होता है और यह भी सम्भव है कि मेंढ़क यह समझते हों कि उनके टर्राने से वर्षा ऋतु आती है।

जो विचारवान मनुष्य हैं, वे अब जान गए हैं कि सभी पवित्र पुस्तकें मनुष्यों द्वारा बनाई गई हैं; कि प्रकृति से ऊपर किसी शक्ति से कभी कोई इलहाम नहीं उतरा है; और कि जितनी भविष्यवाणियाँ हैं, वे या तो असत्य हैं या घटनाओं के बाद में कही गई हैं; कि कभी कोई चमत्कार न हुआ है और न कभी होगा; कि कोई भगवान न तो मनुष्य से अपनी पूजा कराना चाहता है, न कोई सहायता चाहता है; कि किसी प्रार्थना ने आकाश से न पानी की एक बूँद बरसाई और न सूर्य से एक भी किरण। किसी प्रार्थना से आज तक न कोई बाढ़ रुकी, न सागर की लहर और न कभी कोई तूफान। किसी प्रार्थना ने कभी किसी प्यासे की प्यास बुझाई और न कभी किसी भूखे को भोजन दिया। किसी प्रार्थना ने न कभी किसी महामारी को रोका और न कभी किसी भूकम्प को शांत किया और न कभी किसी ज्वालामुखी को ठण्डा किया। कोई प्रार्थना कभी किसी निर्दोष की ढाल नहीं बनी; कभी किसी पीड़ित को सहायता नहीं मिली;

कभी किसी जेल के दरवाजे नहीं खुले; किसी गुलाम को मुक्त नहीं किया; न कभी भले आदमियों की हथकड़ियों को खोला और न कभी लक्कड़ की आग बुझाई।

बुद्धिमान मनुष्य अब जानते हैं कि हम एक प्राकृतिक संसार में रहते हैं, कि ये देवता, शैतान और भगवान के पुत्र, ये सब कपोल कल्पनाएं हैं; कि हमारे मजहब और हमारे देवतागण भी दूसरे राष्ट्रों के मजहब और देवतागण के जैसे ही हैं; और कि एक असभ्य आदमी का पत्थर का देवता ठीक वैसे ही प्रार्थनाओं को सुनता और रक्षा करता है जैसे (ईसाईयों का) पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

5

नैतिकता (morality) के संबंध में भी दो सिद्धांत हैं। एक सिद्धांत है कि नैतिक आदमी बिना यह सोचे कि आज्ञा उचित है या नहीं, एक माने हुए भगवान की आज्ञाओं का पालन करता है। वह मानता है कि भगवान की इच्छा ही नैतिकता का मूल है। वह सोचता है कि एक चीज इसलिए गलत है क्योंकि भगवान ने इससे मना किया है, इसलिए नहीं कि गलत होने के कारण भगवान ने इससे मना किया है। यह सिद्धांत आदमी को सोचने के लिए नहीं कहता, बल्कि आज्ञापालन के लिए कहता है। यह तर्क को अपील नहीं करता, किन्तु सजा के भय और पुरस्कार की आशा को आगे रखता है। भगवान एक राजा है, जिसकी ही इच्छा ही कानून है, और आदमी उसके दास और गुलाम हैं।

बहुत से लोग मानते हैं कि ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास किए बिना नैतिकता असम्भव है और इसके बिना पृथ्वी पर से सद्गुण का लोप हो जाएगा।

यह बेहूदा सिद्धांत, "श्री भगवान उवाच" के साथ, तर्क से स्वतंत्र और ऊपर की वस्तु समझा गया।

दूसरा सिद्धांत है कि सही और गलत वस्तुओं के स्वरूप में ही निहित है; कि कुछ कार्य हैं जो मनुष्य की प्रसन्नता को बनाए रखते हैं या उसे बढ़ाते हैं, और दूसरे कुछ कार्य चिंता तथा दुख को जन्म देने वाले हैं; कि जिन सब कार्यों से प्रसन्नता मिलती हैं, वे सब नैतिक हैं और बाकी सभी या तो बुरे हैं या न अच्छे न बुरे। सही और गलत किसी माने गए भगवान के इलहाम से प्राप्त नहीं हैं, बल्कि आदमी ने ही अपनी समझ और प्रयोगों से इनका पता लगाया है। नैतिकता के बारे में कुछ भी रहस्यपूर्ण या अलौकिक (Supernatural) नहीं है। नैतिकता को किसी अन्य लोक से या एक अनंत शक्ति से भी कुछ लेना-देना नहीं है। यह

इसी लोक में हमारे आचरण पर लागू होती है और उस आचरण का हमारे लोगों पर तथा दूसरे लोगों पर जो प्रभाव पड़ता है, उसी से इसका स्वरूप निश्चित होता है।

इस संसार में लोग मेहनत के द्वारा ही इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए मजबूर हैं। उद्योग एक आवश्यकता है, और जो लोग काम करते हैं उनकी चुराने वालों से स्वाभाविक शत्रुता है।

चोरी को अलोकप्रिय बनाने के लिए भगवान के इलहाम की आवश्यकता न थी। स्वाभाविक रूप से मनुष्य को चोटी पहुँचने, अंग-भंग होने या मारे जाने पर आपत्ति थी, और इसलिए हर जगह, और हर समय, उन्होंने आत्म-रक्षा के प्रयत्न किए हैं। मनुष्यों के मन में आत्म-रक्षा का भाव उत्पन्न करने के लिए भगवान के इलहाम की आवश्यकता न थी। हमला होने पर अपनी रक्षा करना इतना ही स्वाभाविक है जितना कि भूख लगने पर भोजन करना।

किसी माने हुए भगवान की आज्ञा की अनुकूलता या प्रतिकूलता के हिसाब से किसी कर्म की गुणवत्ता का फैसला करना सीधा-सादा अंधविश्वास है। सभी कार्यों को उसके परिणाम के आधार पर परखना वैज्ञानिक है और तर्कसंगत है।

परा-प्राकृतिक सिद्धांत के अनुसार स्वाभाविक परिणामों पर विचार नहीं किया जाता है। कार्य बुरे हैं क्योंकि उनका निषेध किया गया है और अच्छे हैं क्योंकि उनका आदेश दिया गया है। कैथोलिक चर्च की मान्यता के अनुसार, शुक्रवार को मांस खाना ऐसा पाप है, जिसका अनंत दंड मिलना चाहिए। फिर भी, परिणाम की दृष्टि से, स्वाभाविक रूप से, शुक्रवार को मांस खाने का परिणाम, किसी भी दूसरे दिन मांस खाने के परिणाम से अलग नहीं हो सकता। इसलिए सभी मजहब यह शिक्षा देते हैं कि अविश्वास एक अपराध है, वस्तु ओं की स्वाभाविक स्थिति में नहीं, बल्कि भगवान की इच्छा में।

निश्चित रूप से यह बात बेहूदा और मूर्खतापूर्ण है। यदि कोई अनंत शक्ति वाला भगवान हो भी, तो जो कर्म प्राकृतिक दृष्टिकोण से उचित है, वह उसे अनुचित नहीं ठहरा सकता। न ही वह ऐसे कर्म को सही बना सकता है, जिसका स्वाभाविक परिणाम गलत हो। एक अनंत शक्ति वाला भगवान भी एक तथ्य को नहीं बदल सकता। उसके बावजूद भी, वृत्त की परिधि और व्यास में वही संबंध रहेगा।

एक वस्तु का दूसरी वस्तु से, गति का गति से, क्रिया का क्रिया से, तथा कारण का कार्य से, जो पदार्थ कहलाता है उस क्षेत्र में तथा जो मन कहलाता है, उस क्षेत्र में वैसा ही अपरिवर्तनीय संबंध है, जैसा कि परिधि और व्यास का संबंध।

एक अनंत शक्ति वाला भगवान कृतघ्नता को सद्गुण नहीं बना सकता जिस तरह वह एक वर्ग को त्रिभुज नहीं बना सकता है।

इसलिए नैतिक और अनैतिक की नींवें चीजों की प्रकृति में निहित होती हैं -- इनमें आचरण और अच्छाई का अनिवार्य संबंध होता है, और एक अनंत शक्ति वाला भगवान इन आधारों को बदल नहीं सकता, कर्मों के स्वाभाविक परिणाम को घटा-बढ़ा नहीं सकता।

इस संसार में कुछ अचानक नहीं होता है। न कुछ जादू है न कुछ चमत्कार है। हर घटना, हर विचार और स्वप्न के पीछे उचित, स्वाभाविक तौर आवश्यक कारण होता है।

एक माने हुए भगवान की इच्छा को नैतिकता का आधार बनाने की कोशिश ने संसार को दुख और पाप से भर दिया है, करोड़ों दिमागों में जलने वाले तर्क के दीपक को बुझा दिया है, और अनगिनत तरीकों से मानवता की प्रगति में बाधा पहुँचाई है।

समझदार आदमी अब यह जान गए हैं कि अगर कोई अनंत शक्ति वाला भगवान है तो आदमी किसी भी तरह से उसकी प्रसन्नता को बढ़ा या घटा नहीं सकता है। वे जानते हैं कि आदमी केवल जीवित प्राणियों के खिलाफ अपराध कर सकता है, जो उसकी शक्ति के अंदर हैं, और एक सीमित शक्ति वाले प्राणी का एक अनंत शक्ति वाले भगवान के खिलाफ अपराध कर सकना एक बहुत ही असम्भव बात है।

6

हजारों वर्षों तक आदमी असम्भव में विश्वास करता रहा है और उसके पीछे पड़ा रहा है। रसायन-शास्त्र में वह किसी ऐसी वस्तु की खोज में व्यस्त रहा है कि जो दूसरी सामान्य धातुओं को सोने में बदल दे। लार्ड बेकन भी इस बेहूदगी को मानता था। अनेक शताब्दियों तक हजारों आदमी जस्ते और लोहे की प्रकृति को बदलने का प्रयास करते रहे कि वह अंत में सोना बन सके। उन्हें चीजों के वास्तविक स्वभाव की कोई कल्पना न थी। वे समझते थे कि चीजें किसी न किसी प्रकार के जादू से पैदा हुई हैं, और उसी प्रकार के जादू से बदलकर कोई दूसरी चीजें बनाई जा सकती हैं। वे सभी परा-प्राकृतिक में विश्वास करने वाले थे। इसीलिए मशीन-निर्माण (Mechanics) में भी मनुष्य असम्भव की खोज में लगे रहे। वे निरन्तर-गति (Perpetual Motion) में विश्वास करते थे और वे ऐसी मशीन बनाना चाहते थे खुद बिना किसी साधन के लगातार चलती रहे।

हजारों बुद्धिमान आदमियों ने अपना जीवन ऐसी मशीनों के आविष्कार में व्यर्थ नष्ट कर दिया, जो किसी न किसी आश्चर्यजनक तरीके पर गति को जन्म दे सके। वे यह नहीं जानते थे कि गति शाश्वत है; कि न यह उत्पन्न ही की जा सकती है और न यह नष्ट ही की जा सकती है। वे यह नहीं जानते थे कि जिस मशीन में लगातार गति रहेगी, वह अपने में एक विश्व होगी या इस विश्व से बिल्कुल स्वतन्त्र। उसमें जो घर्षण नामक शक्ति रहेगी, वह बिना किसी भी प्रकार की हानि के धकेलने वाली शक्ति में बदल जाएगी अर्थात मशीन खुद उस मूल-शक्ति की जनक बन जाएगी, जिस शक्ति से वह चलेगी। इन सब बेहूदगियों के बावजूद ऐसे आदमी जिन्हें उनके साथी पंडित और समझदार समझते रहे, शताब्दियों तक निरन्तर-गति के महान सिद्धांत के आविष्कार में लगे रहे।

हमारे पूर्वजों ने तारों का अध्ययन किया क्योंकि वे समझते थे कि उनके अध्ययन से राष्ट्रों और व्यक्तियों के भाग्य तथा जीवन का पता लगा सकेंगे। सूर्य-ग्रहण तथा चंद्र-ग्रहण, पुच्छल तारे, तारों के आपसी संबंध, समृद्धि या विनाश, राज्यों के उत्थान-पतन के पूर्व चिह्न और कारण समझे जाते थे। फलित-ज्योतिष (Astrology) एक विज्ञान माना जाता था, और जो इस शास्त्र के ज्ञाता थे, उनकी पूछताछ सेनापति, कूटनीतिज्ञ और बड़े-बड़े महाराजा करते थे। सितारे का विवरण जिससे पूर्व के बुद्धिमान लोगों को शिशु क्राइस्ट का पता चला, किसी फलित-ज्योतिष में विश्वास रखने वाले व्यक्ति द्वारा लिखा गया था। इस तथाकथित विज्ञान के अध्ययन में जो समय बर्बाद हुआ, जो प्रतिभा का नाश हुआ, उसकी वर्णन हो ही नहीं सकता। जो लोग फलित-ज्योतिष में विश्वास रखते थे, वे समझते थे कि वे एक परा-प्राकृतिक संसार में रहते हैं, एक ऐसे संसार में -- जिसमें कार्य-कारण का आपस में कोई संबंध नहीं -- जिसमें सभी घटनाएँ जादू के प्रभाव से होती हैं।

अभी 19वीं शताब्दी की शुरुआत में भी लाखों आदमी हैं जो मूर्खों की जन्म-पत्रियाँ (Horoscope) देखकर ही अपनी आजीविका चलाते हैं।

मशीन-निर्माताओं का निरन्तर गति का सिद्धांत, रसायन-शास्त्र का पारसमणि की खोज में भटकना तथा तारों के संबंध से भविष्यवाणियाँ करना -- ये सभी बातें प्रकृति संबंधी उसी अज्ञान में से पैदा हुई हैं, जिस अज्ञान ने धर्मोपदेशक को एक ऐसे कारण (ईश्वर) की कल्पना करने पर मजबूर किया कि जो स्वयं तो सभी कारणों और कार्यों का कारण है किन्तु उसका कोई कारण नहीं।

धर्मोपदेशकों का दुराग्रह रहा है कि प्रकृति से परे 'कुछ' है, और वह 'कुछ' ही प्रकृति का उत्पन्न करने वाला तथा पालन करने वाला है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जिस प्रकार पारसमणि के अस्तित्व का हमारे पास कोई प्रमाण नहीं, उसी प्रकार हमारे पास उस 'कुछ' के अस्तित्व का भी कोई प्रमाण नहीं है।

यदि कोई मशीन-निर्माता अब निरन्तर गति में विश्वास करता है तो वह पागल है, इसी प्रकार यदि कोई रसायन-शास्त्र एक धातु को दूसरी में बदल देता है तो वह पागल है; यही हाल ईमानदार ज्योतिषी का है और कुछ वर्षों में यही बात सच्चाई के साथ धर्मोपदेशकों के बारे में भी कही जा सकेगी।

हमारे अनेक पूर्वज निरन्तर जवान बने रह सकने के झरनों में विश्वास करते थे और उसकी खोज में लगे रहे। उनका विश्वास था कि एक वृद्ध आदमी यदि झुककर इस स्रोत से पानी पी ले तो उसके सफेद बाल काले हो जाएँ, उसके मुँह की झुर्रियाँ उड़ जाएँ, उसकी धुँधली आँखें चमक उठें और उसका दिल जवानी की गर्मी से धड़कने लग जाए।

वे परा-प्राकृतिक के विश्वासी थे। उन्हें चमत्कारों में था। और उन्हें असम्भव बात से अधिक कोई बात सम्भव मालूम नहीं देती थी।

7

बहुत से आदमी तर्क के स्थान पर नामों का प्रयोग करते हैं। वे प्रसिद्ध मृत महापुरुषों का शिष्य, अनुयायी बनकर ही संतुष्ट हैं। हरेक चर्च, हरेक पार्टी के पास महान लोगों की एक सूची रहती है, और वे जब कभी अपने पंथ और संप्रदाय पर विचार-चर्चा करते हैं तो एक-दूसरे पर इन्हीं लोगों के नाम फैंकते हैं।

लोग बाइबिल को इलहामी, ईसा की दिव्यता साबित करने के लिए सैनिकों, कूटनीतिज्ञों और राजाओं की गवाही पेश करते हैं। इसी प्रकार वे स्वर्ग-नरक का अस्तित्व साबित करते हैं। उनसे किसी एक सिद्धांत का विरोध कीजिए और आपको तुरंत बताया जाएगा कि आइजैक न्यूटन या मैथ्यू हेल दूसरे मत का था, और तुमसे पूछा जाएगा कि न्यूटन या हेल से भी बढ़कर हो। हमारे अपने देश में, धर्मोपदेशक अपनी मूर्खतापूर्ण बातों को साबित करने के लिए, वेबस्टर और दूसरे सफल राजनीतिज्ञों के मतों को उदधृत करते हैं मानो उनके मत ही कोई सबूत हैं।

ज्यादातर प्रोटेस्टेंट इसे खुशी से स्वीकार करेंगे कि वे कुछ आदमियों से बुद्धि और प्रतिभा में हीन हैं जो कैथोलिक मत में जीये और मरे; कि अंतिम संस्कार के उपदेशों के मामले में वे बोसेट के बराबर नहीं हैं; कि उनके अक्षर पास्कल जितने सुघड़ और रोचक नहीं हैं, इन स्वीकारोक्तियों के बाद, यही प्रोटेस्टेंट आग्रह करेंगे कि पोप एक बेशर्म ढोंगी है, और कैथोलिक चर्च एक पिशाच (Vampire) है।

संसार के कथित "महापुरुष" अनेक बातों में बड़ी गलतियाँ करते रहे हैं। लार्ड बेकन ने नक्षत्र-विज्ञान के कोपर्निकस सिस्टम से इन्कार किया और वह अपनी मृत्यु के दिन तक यह मानता रहा कि सूर्य और तारे इस छोटी सी पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। मैथ्यू हेल का दृढ़ विश्वास था कि जादू कर सकने वाली स्त्रियाँ और चुड़ैलें होती हैं। जॉन वेजली का विश्वास था कि भूकम्प पाप का परिणाम है और इन्हें जीसस क्राइस्ट पर विश्वास करके रोका जा सकता है। जॉन कैलविन गोस्पल की शुद्धता बनाए रखने के लिए हत्या को साधनों में से एक मानता था। मार्टिन लूथर ने गैलीलियो को मूर्ख समझा क्योंकि वह मूसा के नक्षत्र-विज्ञान के विरोध में था। वेबस्टर भगौड़े गुलामों के कानून के पक्ष में था और बुक ऑफ जोब को बहुत मानता था। वह वोट चाहता था और उसने दक्षिण (संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी राज्य, जो गुलाम-प्रथा को बनाए रखना चाहते थे।) के आगे घुटने टेक दिए थे।

8

महापुरुषों की मूर्खता और पागलपन पर बड़े-बड़े ग्रंथ लिक्खे जा सकते हैं।

कुछ ही वर्ष पहले जो सचमुच महापुरुष थे, उन्हें यातनाएँ दी गई, कैद किया गया, जला दिया गया। इस तरह से चर्च महापुरुषों को अपनी तरफ रखने में सफल हुआ।

असल में यह बता सकना असम्भव है कि महापुरुष वास्तव में क्या सोचते थे। हम केवल यह जानते हैं कि उन्होंने क्या कहा। इन महापुरुषों को अपने परिवारों का पालन-पोषण करना था, उन्हें जेल से डर लगता था, और वे नहीं चाहते थे कि उन्हें जलाया जाय। इसलिए यह सम्भव है कि वे एक तरह से सोचते हों और दूसरी तरह से बात करते हों।

पुजारियों ने इन लोगों से कहा, "हमारे मत के साथ सहमत हो जाओ। हमारी ओर से बोलो, अन्यथा हम तुम्हें तड़पा-तड़पा कर मार डालेंगे।" फिर पुजारियों ने लोगों को सम्बोधित किया और चिल्लाकर कहा, "जरा सुनो, महापुरुष क्या कहते हैं।"

कुछ वर्षों से वाणी की स्वतन्त्रता जैसी चीज ने जन्म लिया है और बहुत से आदमियों ने अपने विचारों को प्रकट किया है। अब धर्मोपदेशक पहले की तरह नामों की दुहाई नहीं देते। जो वास्तव में महान हैं, वे उनकी तरफ नहीं हैं। आधुनिक विचार के नेता ईसाई नहीं हैं। अब अविश्वासी और नास्तिक लोग बड़े-बड़े नामों को दुहरा सकते हैं -- ऐसे नाम जो मानसिक विजय के द्योतक हैं। हमबोल्ट, हैल्महोल्ट्ज, हैकल और हक्सले, डार्विन, स्पैंसर और टिंडेल तथा अनेक दूसरे महान आदमी विचार के संसार में जाँच-परख, खोज का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये लोग विचारक थे और हैं, तथा इनमें अपने विचारों को प्रकट करने का साहस था और है, वे न तो पुजारियों के हाथों की कठपुतलियाँ थे और न हैं, या भूत-प्रेतों के काँपते हुए पुजारी न थे और न हैं।

अनेक वर्षों से अमेरिकी कालेजों के अधिकांश सभापति मानव-जाति के विकास को रोकने के पवित्र कार्य में लगे रहे हैं। वे यहाँ तक सफल हुए हैं कि उनके शिष्यों में से कोई भी न तो बड़ा वैज्ञानिक हुआ है और न है।

अपने संप्रदाय का समर्थन जुटाने के लिए अब आर्थोडाक्स लोग जीवितों के नाम नहीं लेते। उनके सभी गवाह कब्रों में हैं। सभी "महान" ईसाई मर गए हैं।

आज हम तर्क चाहते हैं, नाम नहीं, दलील चाहते हैं, सम्मतियाँ नहीं। किसी व्यक्ति या चर्च का अंधानुकरण पतन का द्योतक है। तर्क से शासित होने से श्रेष्ठतर कुछ नहीं है। सत्य द्वारा पराजित होने का मतलब है विजयी होना। अनुकरण करने वाला आदमी गुलाम है। विचार करने वाला आदमी स्वतन्त्र है।

हमें याद रखना चाहिए कि ज्यादातर आदमी अपनी परिस्थितियों से शासित रहे हैं। तुर्की के ज्यादातर समझदार आदमी मोहम्मद के अनुयायी हैं। वे कुरान के झूले में झूले थे। उन्हें अपनी शक्ल-सूरत की तरह अपने धार्मिक मत भी अपने माता-पिता से मिले। धर्म के संबंध में उनके मत का कोई विशेष मूल्य नहीं। अपने देश के ईसाईयों के बारे में भी यही कहा जा सकता है। उनके विश्वास, विचार और जाँच-परख के परिणाम नहीं हैं, बल्कि परिस्थितियों के परिणाम हैं।

सभी मजहब अज्ञान के परिणाम हैं और असभ्यता की अंधेरी रात में उनका बीजारोपण हुआ है।

जब रोमन-साम्राज्य का पतन हो गया, जब सारा वैभव जाता रहा, जब व्यापार लगभग रूक गया, जब कमजोर हाथ अधिकार के दंड को न संभाल सके, जब लोग कला और अपनी पुरानी सामर्थ्य को भूल गए, तब ईसाई आए। उन्होंने पृथ्वी की सभी चीजों को घृणा से देखकर, अपने बंधुओं को परलोक की बात बताई -- बादलों के उस पार अनंत-सुख की। यदि विद्या का ह्रास न हो गया होता, यदि लोगों को शिक्षा मिली होती, यदि उन्होंने यूनान और रोम के साहित्य को जाना होता, यदि उनका कला की चीजों से परिचय हुआ होता, यदि वे एसीलस, सोफोक्लीज और यूरीपाइडेस के दुखांत-साहित्य से परिचित होते, जेनो और एपीकरस की फिलासफी से, डेमोस्थनीज के भाषण-कौशल से परिचित होते; यदि वे कला के कार्यों, प्रतिभावान की करामातों, संगमरमर में तीव्र-भावनाओं, पत्थर में स्वप्न से परिचित होते; यदि उन्होंने रोम का इतिहास पढ़ा होता, यदि वे ल्यूक्रेटियस, सिसरो और सीजर को समझे होते; यदि उन्होंने कानून का अध्ययन किया होता; यदि उन्होंने सभी महान मृत व्यक्तियों को जाना होता, तो कहीं ऐसी मिट्टी न होती, जहाँ ईसाई अंधविश्वास जड़ें जमा पाता और बढ़ पाता।

लेकिन आरंभिक ईसाई कला, संगीत और आनन्द -- सबसे घृणा करते थे। उन्होंने मानव-जाति को तिरस्कृत किया। उनका मत था कि यह जीवन केवल दूसरे जीवन की तैयारी में व्यतीत होना चाहिए, कि शिक्षा आदमी के दिमाग में व्यर्थ के संदेह भर देती है और विज्ञान मनुष्य की आत्मा को भगवान से दूर कर देता है।

9

दो मार्ग हैं। एक है भगवान के लिए जीने का। इसे आजमाया जा चुका है, और परिणाम हमेशा एक जैसा रहा है। बहुत वर्ष पहले इसे फिलीस्तीन में आजमाया गया, और जिन लोगों ने इसे आजमाया, उनके भगवान ने उनकी रक्षा नहीं की। वे पराजित हुए, प्रताड़ित हुए और देश से निष्कासित किए गए। उन्होंने अपना देश खो दिया और वे दुनिया में बिखर गए। अनेक शताब्दियों तक वे अपने भगवान से सहायता की आशा लगाए बैठे रहे। उनका विश्वास था कि वे फिर इकट्ठे हो जाएँगे, कि उनके शहर, मंदिर और वेदिकाएं फिर बन जाएँगी, कि वे दुबारा से जेहोवा के चहेते बन जाएँगे, कि वे उसकी सहायता से अपने शत्रुओं पर जीत प्राप्त कर लेंगे और संसार पर राज करेंगे। ज्यों-ज्यों शताब्दियाँ बीतती गईं हैं, यह आशा कमजोर होती गई है। अब तो समझदार लोग इसे एक मूर्खतापूर्ण स्वप्न ही समझने लग गए हैं।

(राबर्ट ग्रीन इंगरसोल ने यह लेख 1884 में लिक्खा था। तब तक इस्राइल की स्थापना नहीं हुई थी। इस्राइल की स्थापना सन 1948 में पश्चिमी देशों की सहायता से, हिटलर द्वारा किए गए होलोकोस्ट में यहूदियों के क्रूर जन-

संहार से उपजी सहानुभूति की भावना से हुई। आज इस्राइल प्रगति कर रहा है, यह मानवीय प्रयासों से सम्भव हो पाया। इसमें भगवान की कोई भूमिका नहीं है। - मनोज मलिक)

भगवान के लिए जीना स्विट्जरलैंड में आजमाया गया, और यह गुलामी और उत्पीड़न में समाप्त हुआ। सुधार और उन्नति का प्रत्येक मार्ग बन्द कर दिया गया। केवल उनको अपने विचार प्रकट करने की अनुमति थी जो सत्ता में थे। किसी ने भी इस संसार में लोगों को सुखी बनाने की कोशिश नहीं की। निर्दोष मनोरंजन को पाप कहा गया। हँसना मना था। सभी तरह की स्वाभाविक खुशियों से नफरत की जाती थी, और स्वयं प्रेम तक को पाप कहकर उसकी निन्दा की गई।

उनका मनोरंजन व्रत रखने और प्रार्थनाएँ रखने से होता, प्रवचन सुनने से होता, अनंत-वेदना की चर्चा करने से, ओल्ड टेस्टामेंट की वंशावलियाँ रटने से, और कभी-कभी अपने किसी साथी को जला डालने से होता।

भगवान के लिए जीने की परीक्षा स्काटलैंड में हुई। लोग किर्कों के दास और गुलाम बन गए। पुजारी अत्याचारी थे। उन्होंने जीवन के स्रोत में ही विष मिला दिया। वे हर परिवार के कामों में दखल देते। किसी घर का निजी जीवन सुरक्षित नहीं था। उन्होंने भय और अंधविश्वास के बीज बोए। उनका कहना था कि वे ईश्वर के संदेशवाहक हैं, और उनके अधिकार को अस्वीकार करना नास्तिकता है, और जो भी उनकी आज्ञापालन नहीं करेंगे, उन्हें अनंत-वेदना सहन करनी होगी। उनके शासन में स्काटलैंड दुख और दर्द का देश बन गया था। सारे लोग गुलाम हो गए थे।

भगवान के लिए जीने की आजमाइश न्यू इंग्लैंड में हुई। ओल्ड टेस्टामेंट के अनुसार एक सरकार की स्थापना की गई। जो कानून बने, वे ज्यादातर तुच्छ और मूर्खतापूर्ण थे, सजाएँ और हद दर्जे की क्रूरतापूर्ण और रक्तरंजित थीं। धार्मिक स्वतन्त्रता को एक अपराध, भगवान के प्रति अपमानजनक समझा जाता था। सत्ताधारी लोगों ने अलग विश्वास वाले लोगों का उत्पीड़न किया, उन पर कोड़े बरसाए, उनके अंग-भंग किए और उन्हें देश-निकाला दिया। शैतान के साथ समझे जाने वाले लोगों को जेल में डाला जाता था या मार दिया जाता था। एक धर्मवादी (Theological) सरकार स्थापित की गई, धर्मोपदेशक भगवान के एजेंट थे, वे कानून बताते थे और सजाएँ निर्धारित करते थे। सब कुछ पुरोहिताई (clergy) की देख-रेख में था। उनके अन्दर कोई दया, करूणा नहीं थी। वे दिलो-जान से प्राकृतिक से घृणा करते थे। वे

अगली दुनिया में प्रसन्नता का वादा करते थे, और इस दुनिया की प्रसन्नता को नष्ट करने के लिए जो कुछ कर सकते थे, वह करते थे।

उनकी सबसे बड़ी संतुष्टि, उनका सबसे शुद्ध आनन्द इस विश्वास में मिलता था कि जो उनका आज्ञापालन नहीं करेंगे, उनका जुआ (Yoke) नहीं ढोएँगे, उन्हें नर्क की आग में अनंत यातना सहनी पड़ेगी।

भगवान के लिए जीना अंधकार युग में आजमाया गया। हजारों सलाखें रक्त से भीग गईं, अनगिनत तलवारें मानव हृदयों में घोंप गईं। लकड़ी के गट्ठों ने मानव मांस का उपभोग किया, तहखाने विचारवान लोगों के घर बन गए। भगवान के नाम पर हर तरह की क्रूरता की गई, हर अपराध किया गया और स्वतन्त्रता धरती से अलविदा ले गई। हर जगह परिणाम एक जैसा था। भगवान के लिए जीने ने, संसार को रक्त और ज्वाला से भर दिया।

एक दूसरा मार्ग है, हम मनुष्य के लिए जीयें, इस संसार के लिए जीयें। आओ हम दिमाग को विकसित करें और दिल को सभ्य बनाएँ। आओ हम प्रसन्नता की शर्तों का पता लगाएँ और उनके अनुसार जियें। आओ हम अज्ञानता, गरीबी और अपराध के विनाश के लिए जो कुछ कर सकते हैं, वह करें। आओ हम शरीर की जरूरतों को पूरा करने, दिमाग की भूख को शांत करने के लिए, प्रकृति के रहस्यों का पता लगाने के लिए जो सर्वोत्तम कर सकते हैं, वह करें। आओ हम इसकी अदृश्य शक्तियों को मानव-जाति का अनथक नौकर बनाने के उद्देश्य के लिए और संसार को प्रसन्न घरों से भर देने के लिए जो सर्वोत्तम कर सकते हैं, वह करें।

आओ भगवानों को अपनी देखभाल खुद करने दें। आओ हम मनुष्य के लिए जियें। आओ हम याद रक्खें कि जिन्होंने प्रकृति के सत्यों को ढूँढ़ने का प्रयास किया, उन्होंने कभी अपने साथी-मनुष्यों का उत्पीड़न नहीं किया। नक्षत्र-विज्ञानियों और रसायन-शास्त्रियों ने कोई जंजीरें नहीं बनाईं, कोई तहखाने नहीं बनाए। दार्शनिकों ने अपने सिद्धांतों की सच्चाई को दिखाने के लिए अपने पड़ोसियों को नहीं जलाया। महान नास्तिक, विचारक मनुष्य की भलाई के लिए जिये।

सत्य की खोज करना, मानसिक ईमानदारी, दूसरों को सच्चाई के साथ अपनी बात कहना, अपने दिमाग का सही चित्र उपस्थित करना -- यह एक श्रेष्ठ कार्य है।

10

दोनों रास्तों में से एक है -- तंग रास्ता जिस पर स्वार्थी लोग अकेले-अकेले चलते हैं, यह इतना चौड़ा नहीं है इस पर उनकी पत्नी और बच्चे भी साथ चल सकें। अंधविश्वास के

रेगिस्तान की यह तंग सड़क है। तंग रास्ता जिस पर घास उगी हुई है, टूटे काँच, काँटों और गोखरू से भरा हुआ, जिस पर द्विज लहूलुहान पैरों के साथ लंगड़ाते हुए चल रहे हैं। यदि इस रास्ते पर तुम्हें एक फूल दिखाई दे जाए, तो उसे न उठाओ। यह एक लोभ है। उसके पत्तों में एक साँप छिपा है। अपनी आँखें 'नये यरूशलम' की ओर रक्खो। स्त्री, बच्चों और मित्र की तरफ पीछे मुड़कर मत देखो। तुम केवल अपने आपको बचाने की कोशिश करो। भले ही जो लोग तुम्हें प्रेम करते हैं, वे सभी नर्क में ही पड़े रहे, तुम स्वर्ग में प्रसन्न रह सकोगे। विश्वास रक्खो, श्रद्धा रक्खो, और तुम पुरस्कृत होगे। न दाईं और देखो, और न बाईं ओर। सीधे नाक की सीध में चले चलो, तो तुम अपनी निकम्मी, शुष्क, स्वार्थी आत्मा की रक्षा कर लोगे!

वह एक तंग सड़क है जो पृथ्वी से ईसाईयों के हृदयहीन स्वर्ग की ओर जाती है।

दूसरा रास्ता है -- विशाल रास्ता। मुझे चौड़ा रास्ता दीजिए जो कम से कम इतना चौड़ा अवश्य हो कि हम सब उस पर मिलकर चल सकें। चौड़ा रास्ता, जिस पर पक्षी गाते हों, जहाँ सूर्य चमकता हो और जहाँ पानी के झरने कल-कल करते हों।

आओ हम संसार के साथ चौड़े रास्ते पर चलें। विज्ञान और कला के साथ, संगीत और नाटक के साथ, और उस सबके साथ, जो प्रसन्न करता है, जो धड़कन पैदा करता है, जो संस्कृत बनाता है, और जो शांति प्रदान करता है।

आओ हम पति-पत्नी, बच्चों और मित्रों के साथ इस चौड़ी सड़क पर चलें और तमाम आनंद और प्रेम के साथ जो जीवन के उषा-काल और सन्ध्या-काल के विचित्र दिन में हमें प्राप्त हो सका है।

यह संसार संतरों का महान वृक्ष है, जो खिला है, जिस पर ऐसे फल लगे हैं, जो पके हैं और पक रहे हैं। जहाँ झुकी हुई टहनियों के नीचे पड़े हुए पत्ते धीरे-धीरे धूल में मिल जाते हैं।

प्रत्येक संतरा अपना जीवन है। हम इसको इतना निचोड़ लें और इसमें जितना भी रस है, निकाल लें, ताकि मृत्यु के समय हम कह सकें:- हमने जीवन-रस का पान कर लिया और अब उसमें सूखे छिलकों के सिवाय कुछ शेष नहीं रहा।

हम चौड़े और प्राकृतिक रास्ते पर चलें। हम आदमी के लिए जिये।

संसार को अंधविश्वास के कारण, मजहब के कारण, पशु-पत्थर और भगवान की पूजा के कारण जो पीड़ा भुगतनी पड़ी है, उसका विचार करने से ही दिमाग पगला जाता है। अज्ञान

और भय की लम्बी रात्रि की बात सोचो, अतीत के दुख-दर्द की बात सोचो, उन दिनों की जो अब लौटकर नहीं आएँगे।

मैं देखता हूँ। मैं देखता हूँ अंधेरी गुफाओं में कुंडली मारे हुए साँपों को जो अपने शिकार की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं देखता हूँ उनके खुले हुए जबड़े, उनकी चंचल जीभें, उनकी चमकती हु ई आँखें तथा उनके बेरहम दाँत। मैं देखता हूँ कि किस प्रकार वे नाग-देवता को संतुष्ट करने के लिए माता-पिता द्वारा दिए गए बच्चों को डस-डसकर मार डालते हैं।

मैं फिर देखता हूँ। मुझे दिखाई देते हैं पत्थरों के मंदिर जिन पर सोना जड़ा हुआ है। मुझे वेदिकाएँ दिखाई देती हैं जो इन्सानी खून से लाल हैं। मुझे वे पुरोहित दिखाई देते हैं जो लड़कियों की छाती में छुरे घोंप देते हैं। मैं फिर देखता हूँ। मुझे दूसरे मंदिर और दूसरी वेदिकाएँ दिखाई देती हैं, जहाँ बच्चों का मांस और रक्त आग की लपटों की भेंट चढ़ाया जाता है। मुझे दूसरे मंदिर, दूसरे पुरोहित और दूसरी वेदिकाएँ दिखाई देती हैं, जहाँ बैलों, मेमनों और कबूतरों का रक्त बहता है।

मैं फिर देखता हूँ। मुझे दूसरे मंदिर, दूसरे पुरोहित और दूसरी वेदिकाएँ दिखाई देती हैं, जहाँ मनुष्य की स्वतन्त्रताओं को बलिदान किया जाता है। मैं देखता हूँ भगवान के बड़े-बड़े गिरजाघर, किसानों की झोंपड़ियाँ, पुजारियों और राजाओं के ठाठ-बाट की पोशाकें, ईमानदार आदमियों के फटे-पुराने कपड़े।

मैं फिर देखता हूँ। भगवान के प्रेमी मनुष्य के हत्यारे हैं। मैं देखता हूँ कि जो श्रेष्ठ हैं, वे जेलों में बन्द हैं। मुझे दिखाई देते हैं वे लोग जिन्हें देश-निकाला दिया गया, जो दर-दर भटकते हैं, जिनका सामाजिक बहिष्कार हुआ है, और लाखों शहीद, विधवाएँ और अनाथ बच्चे। दिखाई देते हैं। मैं देखता हूँ उत्पीड़न के खतरनाक औजार और लाखों मृतकों की चीख़-पुकार सुनता हूँ।

मैं तहखानों की उदासी देखता हूँ, मैं जंजीरों की आवाज सुनता हूँ। मैं लकड़ी की ज्वाला देखता हूँ, झुलसे और काले पड़े चेहरे देखता हूँ, हाथ-पैरों की छटपटाहट देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि पुरोहितों ने सारे संसार को पद-दलित कर रक्खा है, स्वतन्त्रता बेड़ियों मे जकड़ी है, हर सद्गुण एक अपराध बना हुआ है, हर अपराध को एक सद्गुण, बुद्धि से घृणा की जाती है, मूर्खता को पवित्रता की पदवी दे दी जाती है, ढोंग के सिर पर ताज है और सम्मान का श्वेत मस्तक लज्जा से झुका हुआ है। यह था।

मैं फिर देखता हूँ, मुझे आशा की पूर्व दिशा के मनोहर आकाश पर सुबह की सूचना देने वाली पहली पीली किरण दिखाई देती है। मैं देखता हूँ, और मुझे राख में से, रक्त में से तथा आँसुओं में से, वीर बाहर आते दिखाई देते हैं, जो इतिहास का बदला लेंगे और भविष्य को आशीर्वाद देंगे। मुझे दुनिया में एक भयानक युद्ध दिखाई देता है, और उस भयानक युद्ध में सिंहासन डगमगाते, वेदिकाएँ गिरतीं, जंजीरें टूटतीं तथा पंथ बदलते हुए दिखाई देते हैं।

उच्चतम शिखरों पर पवित्र प्रकाश पहुँच गया है। अरुणोदय हो गया है। मैं फिर देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि समुद्र-यात्री समुद्रों को पार कर रहे हैं। मैं देखता हूँ कि आविष्कारक चतुराई से प्रकृति की शक्तियों को वश में कर रहे हैं। मैं देखता हूँ कि बच्चों के लिए विद्यालय बन रहे हैं। धीरे-धीरे पुजारियों का स्थान अध्यापक और प्रकृति के व्याख्याता ले रहे हैं। दार्शनिक पैदा हो रहे हैं। विचारक अपने मानसिक धन से दुनिया को मालामाल कर रहे हैं और वाणी सत्य-भाषण से धनी हो रही है। यह है।

मैं फिर देखता हूँ, लेकिन अब भविष्य की ओर। पोप, पादरी-पुरोहित, राजा सब समाप्त हो चुके हैं। वेदिकाएँ और सिंहासन धूल में मिल गए हैं। पृथ्वी और आकाश के तानाशाह मिट गए हैं। देवता मर गए हैं।

मानवता एक नये धर्म को स्वीकार करने जा रही है। यह इस संसार का धर्म-संदेश है, यह शरीर, दिल और दिमाग का धर्म है। यह स्वास्थ्य और आरोग्य का धर्म है।

मैं संसार को शांतिमय देख रहा हूँ, जहाँ परिश्रम को उसका पूरा पुरस्कार मिलता है, जहाँ जेल नहीं हैं, जहाँ पागलखाने नहीं हैं, जहाँ किसी को फाँसी पर नहीं लटकाया जाता, जहाँ गरीब ईमानदार लड़की को पाप और मृत्यु में से चुनाव नहीं करना पड़ता।

मैं एक ऐसा संसार देखता हूँ जहाँ भिखारी हाथ नहीं फैलाते हैं, जहाँ कंजूस अपनी पथरीली आँखों से घूर नहीं सकता, जहाँ अभाव की दयनीय चीत्कार नहीं है, जहाँ अपराधी का मुरझाया हुआ चेहरा नहीं है, जहाँ झूठ बोलने वाले होंठ नहीं हैं, और जहाँ बेरहम नफरत से भरी आँखें नहीं हैं।

मैं शरीर और दिमाग के रोगों से मुक्त एक नस्ल देखता हूँ, सुन्दर और सुडौल। और जैसे-जैसे मैं देखता हूँ, मुझे अपना जीवन लम्बा होता दिखाई देता है, भय नष्ट होता दिखाई देता है, आनन्द गहरा होता दिखाई देता है और प्रेम अधिक रंगीन। सारा संसार स्वतन्त्र है। यह होकर रहेगा।

***

रॉबर्ट ग्रीन इंगरसॉल का पूरा साहित्य पढ़ने के लिए कृपया इस वेबसाइट पर विजिट करें:-

www.theingersolltimes.com

or

www.gutenberg.org/ebooks/author/robertingersoll